

Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate



नालको  NALCO

जनवरी-मार्च 2021

Editor-in-Chief

Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board

Lina Mohapatra
Swayamprava Rath
Roshan Pandey

Co-ordinator

Shagufta Jabeen

Design Concept

Aswini Sutar

जनवरी-मार्च 2021

प्रकाशक

नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से
राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

प्रयादकीर्तु



ଦୁଇଟି ତୀବ୍ର ସମୟ ମଝିରେ ଯେଉଁ କ୍ଷଣ ମାତ୍ର ଅନ୍ତରାଳ ମିଳେ ତାହା ପୂଲକର ସମୟ । ସେମିତି ଆସିଥାଏଲ ବସନ୍ତ ଶୀତରତ୍ନ ଓ ଗ୍ରୀଷ୍ମ ରତ୍ନର ସନ୍ଧି କାଳରେ । ଏହି ସମୟ ହିଁ ସବୁ ନୂତନତାକୁ ଜନ୍ମ ଦିଏ । ସବୁ ଗଛ ମାନଙ୍କରେ ନୂତନ ପଲ୍ଲବର ସଂଚାର ହୁଏ । ଅଧିକାଂଶ ହୁମ ଜାତୀୟ ବୃକ୍ଷରେ ଫୁଲର ସମ୍ଭାର । ବର୍ଷସାରା ନୀରବ ଥିବା କୋଇଲି ଏବଂ ଏମିତି କେତେବେଳେ

ପକ୍ଷୀଙ୍କର କଣ୍ଠ ଖୋଲିଯାଏ । ତେଣୁ ତ ସେମାନେ କଲରବ କରନ୍ତି । ଧନଧାନ୍ୟର ହିସାବ ଖାତା ବି ଆରମ୍ଭ ହୁଏ । ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ-ଗୁରୁଶିଷ୍ୟ ବା ଅଧ୍ୟୟନ ଓ ଅଧ୍ୟାପନାର ଅଧ୍ୟାୟ ଆରମ୍ଭର ସମୟ ହେଉଛି ବସନ୍ତ ଋତୁ । କୁହାଯାଏ ସୃଷ୍ଟିର ପ୍ରଥମ ଦିନ ଏଇ ଚୈତ୍ର ଶୁକ୍ଳପକ୍ଷ ପ୍ରତିପଦାରୁ ହିଁ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା । ଏହା ବି ଥିଲା ବ୍ରହ୍ମାଙ୍କର କାଳ ଗଣନାର ପ୍ରଥମ ଦିନ । ରାଜା ରାମ, ରାଜା ଯୁଧିଷ୍ଠିର ଓ ରାଜା ବିକ୍ରମାଦିତ୍ୟ ଇତ୍ୟାଦି ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିକଶିତ ବସନ୍ତର ଏହି ଦିନରେ ହିଁ ସିଂହାସନ ଆରୋହଣ କରି ନିଜର ରାଜ୍ୟାଭିଷେକ କରାଇଥିଲେ । ସେଥିପାଇଁ ତ ବସନ୍ତର ଏହି ସମୟକୁ ଅନେକ ରାଜ୍ୟରେ ଯୁଗାଡ଼ି (ଯୁଗ-ଆଦି) ହିସାବରେ ପାଳନ କରାଯାଏ । ସେଥିପାଇଁ ତ ଆଜି ବି ଗାଆଁ ଗାଆଁରେ ଠାକୁର ଘରେ ଏହି ସମୟରେ ହିଁ ପାଞ୍ଜି ଖୋଲାଯାଇ ବର୍ଷକର କାଳ ଗଣନା ଆରମ୍ଭ କରାଯାଇଥାଏ ।

ଆମ ପୁରାତନ ପରମ୍ପରାରେ ସେଥିପାଇଁ ଯୁବବର୍ଗ ମାନଙ୍କ ପାଇଁ ବସନ୍ତୋତ୍ସବ ପାଳନ କରାଯାଉଥିଲା । ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍ ତେ ନ ଥିଲା । ସେମିତି ରାଧା କୃଷ୍ଣଙ୍କର ଯୁଗଳ ମୁର୍ତ୍ତିକୁ ବିମାନରେ ଧରି ଗ୍ରାମବାସୀମାନେ ଗାଆଁ ଗାଆଁ ବୁଲୁଥିଲେ । ମେଳନ ହେଉଥିଲା । ଅବିର ଓ ରଙ୍ଗ ଖେଳରେ ଜୀବକୁ ରଙ୍ଗୀନ କରାଉଥିଲେ । ଚାଷ କାର୍ଯ୍ୟ ସବୁ ପ୍ରାୟ ସମାପ୍ତ ହୋଇଯାଉଥିଲା । ଏହି ସମୟବେଳକୁ ଏବଂ ନୂତନ କାର୍ଯ୍ୟ ପାଇଁ ମନରେ ଅପୁରନ୍ତ ଆନନ୍ଦ ସହିତ ଦେହରେ ଶକ୍ତି ଆହରଣର ଏହା ଥିଲା ଏକ ସହଜ ଓ ପ୍ରାକୃତିକ ଅବସର ।

ଇଂରାଜୀ ନବବର୍ଷରେ କାଳ ଗଣନା ତ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଯାଏ ଜାନୁଆରୀ ଏକ ତାରିଖରୁ । କିନ୍ତୁ କାର୍ଯ୍ୟ ଗଣନା ବା କାର୍ଯ୍ୟାରମ୍ଭ ହୋଇପାରେ ନାହିଁ । ଅପେକ୍ଷା କରିବାକୁ ପଡ଼େ ଇଂରାଜୀ ଅପ୍ରେଲ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ । ଜାନୁଆରୀ ପହିଲା ସ୍ବାଭାବିକ ଭାବରେ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭର ନୂତନ ତିଥି ହୋଇପାରେ ନାହିଁ । ଅନ୍ୟ ପକ୍ଷରେ ବିଦ୍ୟାରମ୍ଭ ହେଉ ଅଥବା ଆର୍ଥିକ ବର୍ଷ ହେଉ ବା କୃଷି ବର୍ଷ ହେଉ ଅଥବା ନୂତନ ପଲ୍ଲବର ସଜାଇ ହେଉଥିବା ବୃକ୍ଷଲତାଙ୍କର ନବକଳେବର ହେଉ ବସନ୍ତ ହିଁ ଆଣି ଦେଇଥାଏ ନୂତନତା । ବିକାଶର ନବ ପଲ୍ଲବ । କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭର ନୂତନ ଦିବସ । ବର୍ଷ ଶେଷରେ କର ଲେଉଟାଣିର ସମୟ । ବୃକ୍ଷଲତା, ପଶୁପକ୍ଷୀ, ମଣିଷ ସମସ୍ତଙ୍କ ଭିତରେ ଆସିଥାଏ ଅପୁରନ୍ତ ଶକ୍ତି ଓ ଉତ୍ସାହ । ତାହାହିଁ ତିଆରି କରେ ସୃଜନର ଭିତ୍ତିଭୂମି । ପ୍ରକୃତି ଦେଉଥିବା ସ୍ବାଭାବିକ ବାତାବରଣ ଭିତରେ ହିଁ ମନ ମଧ୍ୟରେ ଆସୁଥିବା ଉତ୍ସାହ ଓ ଶିହରଣ ମଣିଷକୁ କର୍ମଠି ଓ କର୍ତ୍ତବ୍ୟପରାୟଣ କରାଏ ।

ତେଣୁ ଅନେକ କବି, ସାହିତ୍ୟିକ, ଦାର୍ଶନିକ ଓ ସମାଜତତ୍ତ୍ୱବିତ୍ ବସନ୍ତର ଜୟଗାନ କରିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ସମାଜ ସଂରଚନାର ଆଧାରଶିଳା ପ୍ରସ୍ତୁତ କରି ତାକୁ ପରମ୍ପରାର ରୂପ ପ୍ରଦାନ କରିଛନ୍ତି । ଆସନ୍ତୁ ପ୍ରକୃତି ଓ ସମାଜ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବା ବସନ୍ତର ଏ ମହାତ୍ମ୍ୟ ମୁହୂର୍ତ୍ତକୁ ଜୀବନଭରି ଭଲପାଇବା ଓ ପ୍ରାଣଭରି ଉପଭୋଗ କରିବା ।

ସମ୍ମିତା ପାତ୍ର

अंपादकिय



दो मुश्किल समय के बीच में जो एक राहत का पल मिलता है, वही उल्लास का पल होता है। इसी प्रकार शीत और ग्रीष्म के बीच बसंत का आगमन होता है; यही समय नवीनता को भी जन्म देता है। हर पेड़-पौधे में नवीन अंकुर का संचार होता है। इस समय पेड़-पौधे फूलों-फलों से लद जाते हैं। वर्ष-भर मौन रहने वाले पशु-पक्षी गण, कोयल कुहुकना आरंभ कर देते हैं। जो धीरे-धीरे कलरव में तब्दील हो जाता है। धन-धान्य, लेखा-जोखा नए खाते के साथ आरंभ हो जाते हैं। छात्र-छात्रा, गुरु-शिष्य के अध्ययन-अध्यापन का दौर भी इसी काल में आरंभ हो जाता है। सृष्टि का पहला दिन भी इसी चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से ही आरंभ होता है। ब्रह्मा के काल गणना की शुरुआत भी इसी दिन से ही होती है। राजा राम, राजा युधिष्ठिर और राजा विक्रमादित्य आदि राजाओं का भी इसी दिन राज्याभिषेक किया गया था। इसी कारण बसंत के इस समय को युग का आरंभ माना जाता है। आज भी हर गाँव में मंदिर में पंचांग देखकर पूरे साल की गणना की जाती है।

इसी क्रम में हमारी पुरानी परंपरा में युवाओं द्वारा बसंत उत्सव मनाया जाता था। तब, 'वैलेनटाइन डे' नहीं हुआ करता था। राधा-कृष्ण की युगल मूर्ति को पालकी में स्थापित कर गाँव-वासी अपने कंधों पर गाँव-गाँव भ्रमण किया करते थे। तब मेला-उत्सव हुआ करता था। अबीर और रंग के खेल से जीवन को भी रंगीन किया जाता था। कृषि कार्य इस समय तक लगभग समाप्त हो जाते थे एवं नवीन कार्यों के लिए मन में आपूरित आनंद के साथ ऐसे मेल एक सहज और प्राकृतिक आनंद का श्रोत हुआ करते थे।

अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार पहले जनवरी से नव-वर्ष की शुरुआत होती है। किंतु कार्य गणना या कार्यारंभ नहीं हो पाते हैं, इसके लिए अंग्रेजी के अप्रैल माह तक प्रतीक्षा करनी होती है। पहला जनवरी स्वाभाविक रूप से कार्यारंभ करने की नयी तिथि नहीं हो सकती है। दूसरे शब्दों में, विद्यारंभ हो अथवा आर्थिक वर्ष हो अथवा कृषि वर्ष हो अथवा नूतन पल्लव से सजी वृक्ष-लता का नया कलेवर हो, यह नूतनता बसंत से ही आती है। विकास का नव-पल्लव, कार्यारंभ का नूतन दिवस इसी से संचालित होता है। वर्ष के अंत में करवट लेने का समय, वृक्ष-लता, पशु-पक्षी और मनुष्य सब में आपूरित नयी शक्ति और उत्साह का संचार करते हैं जो नव-निर्माण के लिए पृष्ठ-भूमि तैयार करती है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त सामान्य वातावरण में ही मन में आने वाले उत्साह और एहसास मनुष्य को कर्मठ और कर्तव्यपरायण बनाते हैं।

अतः अनेक कवि, साहित्यिक, दार्शनिक और समाज-तत्व विद ने बसंत का जय-गान करने के साथ-साथ समाज के संरचना की आधार-शिला प्रस्तुत कर उसे परंपरा का स्वरूप प्रदान किया है। आइए, प्रकृति और समाज प्रदान करने वाले बसंत के इस पावन और महत्वपूर्ण मुहूर्त को मन भर स्नेह करें और जी-भर इसका आनंद लें।

सस्मिता पात्रा

हमारी बेटी: सामान नहीं अभिमान

"अरे बारात आ गई है! अगर तुम लोगों का बत्तीसी दिखाना हो गया हो, तो ज़रा रीता को नीचे ले आओ! और हाँ, देखना ज़रा वो ठीक से तैयार हुई है या नहीं!" माँ ने कहा।

"प्यारी चाची, यही तो उम्र है, हमारी बत्तीसी दिखाने की! अब नहीं दिखाएँगे तो क्या बुढ़ापे में दिखाएँगे।" लड़कियों ने चुटकी लेते हुए कहा।

"अच्छा-अच्छा अब जाओ भी दुल्हन को नीचे ले आओ।"

रीता को दुल्हन के लिबास में देख कर माँ के आँसू खुद-ब-खुद बहने लगे। "अब बस भी करो कल्याणी, इसे एक न एक दिन तो पराए घर जाना ही था और खुश हो जाओ कि इस मॉडर्न जमाने में भी वो तुम लोगों की पसंद से शादी कर रही है। अब और क्या चाहिए भला!" रूपा चाची ने उन्हें सँभालते हुए कहा।

"हाँ दीदी मुझे नाज़ है अपनी बेटी पर, पर सोचती हूँ कि समय का पहिया कितनी जल्दी-जल्दी घूमता है। ऐसा लगता है जैसे कल ही की बात हो, जब हमने अपने तीन बेटों के बाद बड़ी मन्त्रों से रीता को पाया था। सबकी दुलारी है वो। बस भगवान करे अपने ससुराल में भी वो इतनी ही नाज़ों से रहे।"

"हाँ हाँ! ज़रूर!! अरे बड़े खानदानी लोग हैं शर्माजी। धन-वैभव की कोई कमी नहीं है। अरे राज करेगी अपनी रीता राज! बस अब तुम रोना बंद करो और रस्मों पर ध्यान दो।"

बड़े आलीशान तरीके से रीता और रोहन की शादी हुई। अच्छा समधी जी, अब इज़ाजत दीजिये। सब कुछ बड़ा अच्छा रहा। अब आपकी बेटी को हम अपनी बहू बना कर

लिए जा रहे हैं, किसी चीज की चिंता मत करिएगा।"

"अरे नहीं नहीं, समधी जी, चिंता किस बात की मेरी बेटी एक घर से दूसरे घर ही तो जा रही है। बस एक बात, तीन बेटों में इकलौती बेटी है हमारी, इसलिए सबकी लाडली है और बड़े नाज़ों से पली है। इसलिए उसकी गलतियों को बचपना समझ कर माफ़ कर दीजिएगा।" रीता के पिता ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

"अरे नहीं नहीं! आप बेफ़िक्र रहिए समधी जी। अच्छा अब हमलोगों को इज़ाज़त दीजिए।"

शादी के एक महीने तक सब कुछ ठीक-ठाक रहा। एक दिन अचानक रीता का फ़ोन आता है। "हैलो!! हैलो माँ!!"

"रीता !! तुम बहुत दिन जिन्दा रहोगी। अभी हमलोग तुम्हें ही याद कर रहे थे। कैसी हो तुम?"

"माँ, क्या आप और पापा अभी घर आ सकते हैं? क्या हुआ सब ठीक तो है ना? बस आ जाइए।" कह कर रीता ने फ़ोन काट दिया।

"क्या हुआ रीता ने हमें क्यों बुलाया?" "माँ !!माँ!!" यह कह कर रीता ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

"अरे ये क्या बोलेगी मैं आपको बताता हूँ। आपकी प्यारी बेटी की शादी से पहले बड़े सारे अफ़ेयर थे और ये बात आपके ही एक करीबी रिश्तेदार ने बताया हमें।"

"दामाद जी ये क्या बोल रहे हैं आप? होश में तो हैं? ये क्या इल्जाम लगा रहे हैं आप? क्या आपने इस इल्जाम की सच्चाई का पता लगाया?"

"समधी जी, आप ही समझाइए दामाद जी को।"

"मैं क्या समझाऊँ? आपने हमें धोखा दिया है। अपनी बदचलन लड़की को हमारे गले बाँध दिया।"

"बस कीजिए आप सब। रीता हमारी बेटी है और हमने इसे जो संस्कार दिए हैं, उसके लिये हमें किसी के प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है।"

"तो ठीक है ले जाइए अपनी संस्कारी बेटी को और हमें बख़्श दीजिए।"

"चलो रीता यहाँ से, यहाँ के लोग तुम्हारी कद्र नहीं जानते,



लेकिन जब जान जाएंगे तब घुटनों के बल बैठकर माफ़ी माँगेंगे।”

इस घटना को 5 महीने बीत चुके थे। रीता हमेशा खोई-खोई सी रहती थी। उसकी सारी चंचलता-चपलता मानो कहीं खो गई हो। घर वालों से उसकी ये दशा देखी न जा रही थी। एक दिन पिताजी उसके पास आए और बोले, “बेटा, जिन्दगी किसी के लिए नहीं रुकती लेकिन, वो सबको बराबरी का मौका ज़रूर देती है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी जिन्दगी को एक ऐसे रूप में ढालो जहाँ लोग सिर्फ तुम्हारी खूबी देखें।” ये बात रीता के मन में घर कर गई और वो जी जान से नौकरी की तैयारी में जुट गई। भला परिश्रम कब बेकार जाता है। उसे एक अच्छी सरकारी नौकरी मिल गई।

जैसे ही ये बात रीता के ससुराल वालों को पता चली उनकी बेचैनी बढ़ गई, क्योंकि रीता अब उनके लिये सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी बन गई थी। उन्होंने रोहन को रीता से सुलह कर घर वापस लाने के लिए भेजा।

“रीता!! रीता!!”

“हाँ, क्या हुआ माँ!!”

“तुम!!” रीता रोहन को देख कर चौंक जाती है।

“रीता मुझे माफ़ कर दो, मैं बहुत शर्मिदा हूँ। मुझसे गलती हो गई। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। आओ चलो, अपने घर चलते हैं।” यह कह कर रोहन ने रीता का हाथ पकड़ लिया।

रीता के पिता ने रोहन को एक ज़ोरदार थप्पड़ जड़ते हुए कहा, “छोड़ो उसका हाथ। शर्म नहीं आती तुम लोगों को!! नीच! लालची! आज जब ये कमाने लगी तो तुम लोगों को इसका चरित्र याद नहीं आया। आज नहीं कहोगे इसे बदचलन? दामाद जी, हमारी बेटी कोई सामान नहीं है, जो जब मर्ज़ी रख लिया, जब मर्ज़ी लौटा दिया। ये हमारा अभिमान है। ये आज जिस मुकाम पर खड़ी है, वहाँ इसे तुम जैसे लोगों की ज़रूरत नहीं है, इसलिए अब तुम जा सकते हो।”

“पर पापा!! रीता!! रीता!! तुम तो समझाओ पापा को। मैं तुम्हारा पति हूँ। शादी हुई है हमारी।”

“रोहन ये बातें अब तुम्हारे मुँह से बेमानी लगती हैं। सुना नहीं पापा ने क्या कहा अब जाओ यहाँ से।” रोहन अपना सा मुँह लेकर लौट गया। रीता के पिता के चेहरे पर एक तसल्ली, एक अभिमान स्पष्ट झलक रहा था।

स्वाति तिवारी, अनुगुळ

दुहिता

मैं दुहिता,
जननी-जन्मदायिनी
ईश्वर का वरदान,
दो कुलों का अभिमान।
मैं घर-आँगन की शोभा,
मुझसे सजता जीवन सबका,
दो-दो घर मुझसे सजते,
वंश को आगे मैं बढ़ाती,
सोचो अगर मैं ना होती,
कौन तुम्हारी बहन कहलाती?
कहाँ से मिलता बहन का प्यार?
कैसे मनाते राखी का त्यौहार?
कैसे मिलता पत्नी का प्यार?
कैसे मिलता खुशियों का संसार?
कहाँ मिलती माँ की ममता?



एक अनोखा, पवित्र रिश्ता!
सोचो अगर मैं न होती,
कौन दादी-नानी बनती?
गोदी में लेकर लोरी सुनाना!
परियों के शहर ले जाकर घुमाना,
नारी है शक्ति, नारी है भक्ति!
नारी है रेशम की डोर,
नारी ही सृष्टि, नारी से ही दृष्टि,
नारी से है सारा संसार,
बहन, बेटी व माँ बनकर,
लुटाती अपना प्यार!

सिर्फ नारी करती सदा,
सारे संसार का उद्धार।।

स्नेहा पात्र
दामनजोड़ी

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस किसी धर्म विशेष का नहीं अपितु एक राष्ट्रीय पर्व है। प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को यह पर्व बड़े गर्व और शौर्य का परिचय देते हुए मनाया जाता है। हर भारतीय इस पर्व को उल्लासपूर्वक मनाते हैं।

गणतंत्र दो शब्दों से बना है। गण और तंत्र अर्थात् जन अथवा जनता और तंत्र अर्थात् प्रणाली; अतः इसका अर्थ हुआ- जनता द्वारा संचालित कार्यप्रणाली जिसमें जनता के द्वारा ही चुने हुए प्रतिनिधि जनता के लिए काम करते हैं।

विश्व के 196 देशों में से 159 देश अपने को गणतंत्र कहते हैं लेकिन भारत एक लोकतांत्रिक गणतंत्र है या गणराज्य है, अर्थात् भारत में जनता के लिए, जनता द्वारा ही निर्वाचित जनप्रतिनिधि पूरी कार्यप्रणाली बनाते हैं और संचालित करते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं, 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ था। एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान 26 जनवरी 1949 को अपनाया गया और 26 जनवरी 1950 को इसे एक लोकतांत्रिक सरकार व्यवस्था के साथ लागू किया गया था, क्योंकि 26 जनवरी 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था।

26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा इसके उपरांत सामूहिक रूप से खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। इस

अवसर पर विशेष रूप से राजधानी दिल्ली में राजपथ पर भारतीय सेना के विभिन्न अंग - जल सेना, थल सेना और वायुसेना भाग लेते हैं। इस मौके पर अलग-अलग प्रांतों की मनमोहक झाकियाँ भी प्रस्तुत की जाती हैं। अनेकता में एकता का विशेष एहसास दिलाती इन झाकियों को देखना बड़ा ही मनोहारी होता है। इस दौरान भारत को गौरवान्वित करने वाले शहीदों के परिवारों को शहीदों के नाम से सम्मानित एवं पुरस्कृत भी किया जाता है।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारत में इस वर्ष का 72 वाँ गणतंत्र दिवस मनाया गया। हालाँकि, कुछ अवांछित घटनाओं से एक नया परिदृश्य ही बन चुका था। जिस वजह से जनतंत्र भीड़ तंत्र में बदलता हुआ भी कुछ हद तक दिखाई दिया। आइए, इसे रोकने के लिए साथ मिलकर प्रयास करें तथा आगामी वर्षों में इस गौरवशाली एवं गरिमामयी पर्व को पूरे उल्लास के साथ मनाएँ। यह पर्व हमारी राष्ट्रीयता, हमारे भाईचारे और हमारी प्रतिष्ठा का एक सफल प्रतीक है। इसे कायम रखें और भारत को पूरे विश्व में सशक्त और अग्रणी बनाने में अपना पूर्ण योगदान करें।

प्रियंका पाल, अनुगुळ



फिर आया बसंत

सुबह हो चुकी थी। हरिया की आँख तो जाने कब से खुल चुकी थी। पर घर में सब सो रहे थे... आजकल रातों को जागना और दिन में सोना ये सब फैशन था। पर वो ये सब कैसे सीखता? वो तो एक पौधा था न! टाइम पास करने के लिए खिड़की से उचक कर वो उस बिल्लिंग के पीछे झाँक लिया करता था। उसके मालिक का घर चौथे माले पर था इसलिए खिड़की से काफी दूर तक का नज़ारा वो कर सकता था। पर खिड़की के बाहर का नज़ारा भी बहुत ख़ास नहीं था। पीछे एक नाला था जिसमें ज़्यादातर गंदगी ही बहती थी। नाले से पहले एक झुग्गीनुमा जगह थी जिसमें ऐसी कई झोपड़ियाँ थीं जो लगभग ख़ाली थीं। शायद इस बिल्लिंग को बनाने वाले मज़दूर इनमें रहते थे। उनमें से एक घर ऐसा था जो अब भी आबाद था, पर खस्ता हाल था। उसमें एक बूढ़ी कामवाली माई रहती थी। बेचारी किसी तरह एकाध घरों में काम करके अपना पेट पालती थी। यही कारण था कि माई के पैबंद लगे कपड़ों की तरह उसका घर

भी चिप्पीनुमा था। दीवारें इतनी जर्जर कि वक्र के थपेड़े पड़ने की देर थी और चिप्पियाँ तार-तार हो जातीं। पर ऊपरवाले ने अबतक उसे रात में सर छिपाने लायक बनाये रखा था। उसके घर के आस-पास हरियाली भी बहुत कम थी। शायद शुरू में ही उनलोगों ने नारियल के कुछ पेड़ लगाए थे जो वहाँ बहते नाले के प्रदूषण को कम करने में समर्थ नहीं थे। इस समुद्री इलाके में नारियल के पेड़ तो हर जगह दिख जाते थे।

सुबह उठते ही मालिक का सबसे पहला काम होता हमें नहलाना....नहलाना इसलिए कह रहा हूँ भाई क्योंकि वो हमलोगों से इतना प्यार करते थे कि ज़रूरत से ज़्यादा पानी दे देते। वे ठीक उन माँओं की तरह थे जो बच्चों पर अपना



प्यार खाने के ज़रिए उंडेलती थीं। फिर भी मालिक का प्यार इतना निश्चल था कि हम कुछ नहीं कहते और भीगने के बाद हिल-हिल कर अपने पत्तों का पानी झाड़ लेते। हम अपना काम कर लेते और किसी को कुछ समझ भी नहीं आता। बस मालती अप्पा थी, काम वाली बाई मालती अप्पा, जो गुस्से में भन-भन करती रहती थी। उसे फर्श दुबारा जो पोछना पड़ता था। उसे तंग होते देख जहाँ हम खुशी से ठहाके लगाते वहीं माई को देखकर उदास हो जाते। उसकी बूढ़ी काया किसी तरह जान खींच कर अपना काम चला रही थी। 1 साल के अंदर ही उसने अपने पति, बेटे और एक नातिन को खोया था। अब अपने बेटे की आखरी निशानी के साथ रहती थी। वो तो उसकी पोती थी जो उसका ख्याल रखती थी। रविवार को वो लोग केवल एक वक्त काम पर आते और दूसरे पहर उनकी छुट्टी रहती। उस दिन मेरा सारा दिन खिड़की से उचक-उचक कर उन दोनों को देखने में निकल जाता क्योंकि उस दिन उनके घर इंद्रधनुष निकलता। घर के सारे नीले, पीले, लाल कपड़े, चादरें, गंधे सब धुले जाते और घर के सामने सूखने के लिए टाँग दिए जाते। वो अक्सर रविवार को हमारे घर भी आती क्योंकि मालकिन उस दिन उन्हें खाना बना कर देती थीं।

सब कुछ ठीक चल रहा था। मैं भी उस दिन खिड़की के बाहर अपने पत्तों को झुका हवा खा रहा था और छोटी बुलबुल चिड़ियाँ चोंच मार-मार कर मुझे छेड़ रही थी। उसे पता था कि मैं उसे कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि मैं उसे बहुत पसंद करता था। पर तभी मैंने मालिक को देखा कि वे आये और सोफे पर बैठ गए। बड़े उदास दिखाई पड़ रहे थे। मैंने चुनचुन चिड़ियाँ को भगा दिया क्योंकि मामला कुछ संगीन दीख रहा था। मालिक मालकिन को बता रहे थे कि बहुत ही दूर के शहर में उनका ट्रांसफर हो गया है और उन्हें जल्द से जल्द वहाँ के लिए निकलना है। मालकिन भी परेशान हो गई। हम पौधों में भी फुसफुसाहट शुरू हो गई। सब बड़े खुश थे कि नई जगह देखने को मिलेगी। पर सबकी खुशी का सोडा वाटर तब बैठ गया जब मालिक ने कहा कि इतनी दूर ले जाने में तो सारे पौधे मर जाएँगे। ये कहते हुए उन्होंने जब प्यार से मेरे ऊपर हाथ फेरा तो मेरी आँखों से दो बूँद आँसू छलक कर उनके पैरों पर गिर पड़े। उन्हें लगा शायद आज मालकिन ने दोबारा पानी दे दिया है हमें। हम सारे पौधे इस परिवार से बहुत प्यार करते थे। उन्होंने हमें बड़े प्यार से रखा था। शायद इसीलिए हमें खत्म होते हुए नहीं देख सकते थे। पर हमें उनसे बिछड़ने का डर सता रहा था कि पता नहीं हमारा भविष्य क्या हो। उस रात हम सभी की आँखों से नींद कोसों दूर थी।

अगला दिन रविवार था। माई अपने नियम अनुसार खाना लेने आई। मालिक तभी उसे देखते ही जैसे खिल उठे। हम सबके कान खड़े हो गए।

"कमला माई, हमारा एक कहा मानोगी?" मालिक उससे पूछ रहे थे।

"हुकम दीजिये साहिब!" कमला ने छूटते ही कहा।

"कमला, हमारा ट्रांसफर हो गया है। हम बहुत दूर जाने वाले हैं। क्या तुम इन पौधों को अपने घर के सामने वाली ज़मीन में लगाओगी?" साहब के लहजे में उदासी थी।

कमला इस अप्रत्याशित तोहफे से खिल गई। "क्यों नहीं बाबू, जैसा आप कहें। मेरी नातिन इनका बहुत खयाल रखेगी।"

मालिक के मन से जैसे कोई बोझ हट गया हो। मुझे ऐसा लगा जैसे बेटियों का रिश्ता तय हो जाने के बाद माँ-बाप शायद ऐसे ही निश्चिन्त हो जाते होंगे।

अगले हफ्ते ही पर्यावरण दिवस था। पूरा परिवार हम पौधों और सब्जी के कुछ बीजों के साथ नीचे माई की झोंपड़ी के पास गया और हमें ज़मीन में लगा दिया गया। माई की झुगगी के चारों ओर जैसे धरती अपने शस्य-श्यामला रूप में मुखरित हो गई थी। पहली बार धरती माँ के स्पर्श से हमने कैसा महसूस किया ये बताना मुश्किल है। माई के गंदे नाले के पास के घर के चारों ओर की बदली काया को देखकर मेरा दुखी मन आज खुशी से झूम रहा था। पर मालिक से बिछड़ने के दुख से हम सब के नेत्र सजल थे। मालिक ने मुड़ने के बाद हमारी तरफ देखा तक नहीं, पर मुझे पता था कि वो अपने आँसू हमसे छिपाना चाहते थे।

उसके बाद तो हमारी काया सरसराकर बढ़ना शुरू हुई। बरसात में मेरी टहनियाँ और पत्ते और मज़बूत और घने हो गए। माई की खुशी का ठिकाना न रहा जब छोटी बुलबुल चिड़ियाँ ने पहली बार घोंसले के लिए मुझे चुना और 3 अंडे दिए। 15 दिन में ही बच्चे आ गए और वातावरण में खुशियाँ कुछ और घुल गईं। आज मालिक मुझे बहुत याद आ रहे थे। काश वो आकर देखते कि हमें पर्यावरण से जोड़कर उन्होंने क्या चमत्कार कर दिया है! कभी-कभी ऊपरवाला भी हमें दुख इसीलिए देता है क्योंकि उसमें कभी न खत्म होने वाली खुशियाँ छिपी होती हैं।

शगुफ़ता जबी
भुवनेश्वर

मानव जाति और भविष्य

युवा मानव जाति का भविष्य है। मानव जाति आज के दौर में कई समस्याओं से गुजर रही है। आज का मनुष्य शरीर से मानव तो है, पर उसमें मानवता की भावना की कमी देखी जा रही है। हर मनुष्य बस अपने सांसारिक सुविधाओं और स्वार्थ की पूर्ति के पीछे पागल है। हर किसी के मन में बस इन उपलब्धियों की दौड़ में आगे निकलने की होड़ लगी हुई है। इस वास्तविकता के कई प्रमाण हमें देखने को मिलते हैं।

2020 मानव की संवेदनाओं को परखने का साल रहा, जब मजदूर हजारों कि.मी. की दूरी पैदल ही नापते हुए अपने गाँव की तरफ लौट रहे थे। एक दूसरी निर्मम घटना यह भी थी कि एक गर्भवती हथिनी को हँसोड़ों ने तरबूज में विस्फोटक भरकर खिला दिया और उसकी मौत हो गई। ऐसी ही कितनी घटनाएँ वर्ष-दर-वर्ष हमारे आस-पास घटित होती हैं, जब पशु-पक्षियों-जन्तुओं के प्राणों को मानव अपने मनोविनोद के लिए नुकसान पहुँचाता है।

हमारे वीर और परोपकारी डॉक्टर पुलिसकर्मी समाज को अपना स्वार्थ रहित सेवा प्रदान करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दे रहे थे, तब कुछ ही मस्तक सम्मान से झुक सके, बाकी लोगों को इस नेक कार्य के लिए फुर्सत कहाँ थी। जब अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत का रहस्यमय ढंग से निधन हुआ तो हिंदी फिल्म जगत में कितने सितारों को अफसोस हुआ? इन फिल्मी सितारों को इस देश की महान जनता देवताओं की समान पूजती है। पर क्या यह देवता अपने भीतर मानवता रखते हैं? क्या ये साधारण संवेदना के अधिकारी हैं? हाथरस में जो एक मासूम युवती के साथ हुआ, उसने मानवता को शर्मसार कर दिया। हमें मानव होने का अफसोस होने लगा था। 2020 तक ईश्वर की परीक्षा में हम बुरी तरह फेल हो गए। अगर मानव में मानवता नहीं रहेगी तो धरती पर जीवन कठिन हो जाएगा।

आज का मानव भावनाओं का सम्मान करना भी नहीं जानता। एक शिक्षक जो ज्ञान प्रदान करते हैं, उनके प्रति कृतज्ञ होना भी नहीं आता। जो माता-पिता अपनी सारी योग्यता उसके पालन-पोषण में लगाते हैं, उनको आश्रम में छोड़ आता है। एक पत्नी जो अपना घर छोड़कर आती है, उससे बुरा व्यवहार करता है और उसका अपमान करता है। अपनी बेटी को बेटे से कम समझता है। इन कारणों से दुनिया के अधिकतर लोग अवसाद का शिकार हो रहे हैं। जब तक हम किसी से प्रेम नहीं करेंगे, तब तक वह अकेला महसूस करता रहेगा। इंसान को एक अजीब बीमारी यह भी है कि वह दूसरों को दुःखी देखकर प्रसन्न होता है। अगर कार्यालय की चर्चा करें, तो हर कोई दूसरे को नीचा गिरा कर मुकाबला

करना चाहता है। यदि किसी विद्यार्थी के परीक्षा में अच्छे अंक ना आए, तो उसे ताने मारने में पड़ोसियों और दूर के संबंधियों को खूब आनंद आता है। किसी के घर में अगर कलह हो जाए तो उनकी खुशी की कोई सीमा नहीं रहती। अगर हर कोई दूसरे के विकास में बाधक बनेगा तो समाज

की उन्नति कैसे होगी? पृथ्वी के तापमान में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ सुनामी, भूकंप, बाढ़, सूखे की घटनाएँ लगातार बढ़ती ही जा रही हैं। उद्योग और गाड़ियों के धुएँ ने प्राण वायु में जहर भर दिया है। वर्षा के दिनों में कई लोग विद्युत के झटकों से मारे जाते हैं। घर में सूर्य की किरणें अब घातक होने लगी हैं। प्रकृति की अमूल्य देन यथा पशु-पक्षी अब लुप्त होने लगे हैं, ऊर्जा उत्पादन के कई संसाधन समाप्त होने लगे हैं। पिछले वर्ष कोरोना महामारी ने हमें गंभीर चिंता में डाल दिया। क्या हमारा चमत्कारी विज्ञान इन बीमारियों से हमारी रक्षा कर पाएगा? इंसान सुविधाओं का आदी हो चुका है। उसे 5 मिनट के रास्ते के लिए भी कार चाहिए और थोड़ी सी गर्मी हो तो ए.सी.। खाना बनाने से बचने के लिए उसने फास्ट फूड को दिल से अपना लिया है, पर इनका सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इन आदतों के कारण कैंसर और हार्ट अटैक जैसी भयानक बीमारियाँ हो रही हैं। लोग मोटापे का शिकार हो रहे हैं और उनकी आयु कम होती जा रही है। पुराने समय में मानव को सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी, पर वह ज्यादा स्वस्थ था। हमें जरूरत है, कुछ ऐसी आदतों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने की, जो हमें अपने पूर्वजों की तरह स्वस्थ बनाएँ। हमें अपनी आदतों में भी सकारात्मक सुधार लाना चाहिए। मानव का वर्तमान अंधकार से परिपूर्ण है। परिवर्तन की जो ज्योति जल रही है, उसका नाम युवा है, दुनिया को योग्य और प्रतिभावान युवाओं की आवश्यकता है। देश और दुनिया को ऐसे नेता चाहिए, जिसका उद्देश्य देश की सेवा करना हो। अधिकांश नेता तो सिर्फ झूठे वादे करना और अपना बैंक बैलेंस बढ़ाना जानते हैं। दुनिया को आज योग्यता के उपहार मिल रहे हैं। प्रतिभावान युवा विकास की धारा बहाने में सहायक हो सकते हैं। खासकर वैज्ञानिक ऐसे आविष्कार करें, जिससे प्रदूषण भी कम हो और विकास भी हो। न्यायालय में सब को न्याय मिले। काश दुनिया के सभी रोगियों को चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध हो सके।

राजा राममोहन राय और उन जैसे समाज सुधारकों ने समाज के आधारहीन परंपराओं से आगे बढ़कर हमें सही और गलत का भेद बताया। इस समाज में आज भी कई ऐसी



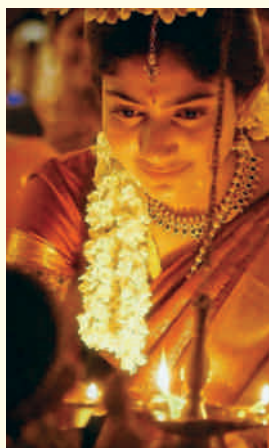
परंपराएँ हैं, जो इसकी प्रगति में बाधा बन रही हैं। हमें आवश्यकता है, ऐसे युवाओं की जो इन परंपराओं से अलग सोचने का साहस रखते हुए दुनिया को बेहतर बनाएँ। ऐसे अधिकारी जो देश को प्रगति का सही अर्थ दिखा सकें, संवेदना की भावना संचरित कर सकें। अपने जीवन में मित्रता और परोपकार को प्रतिस्पर्धा से अधिक महत्व देकर

समाज के लिए आदर्श बन सकें। विज्ञान ऐसी उन्नति करे कि प्रकृति को हानि न पहुँचे और पशु पक्षियों से प्रेम करे। आज के युवा कल के महानायक हो सकते हैं, जो प्रेरणा के स्रोत बन सकते हैं।

अनन्या द्विवेदी
दामनजोड़ी

दुहिता – वंशों की रचिता ।।

क्या हूँ मैं, कौन हूँ मैं, यही सवाल करती हूँ मैं, परिवार का सम्मान, माँ-बाप का अभिमान हूँ मैं ।।
औरत के सब रूपों में सबसे प्यारा रूप हूँ मैं, रिश्तों को प्यार में बाँधने वाली डोर हूँ मैं ।।
जिसको माँ ने बड़े प्यार से है पाला, उस माँ की बेटी हूँ मैं, उस माँ की बेटी हूँ मैं ।।
जिसको हर मुश्किल में सँभाला, उस पिता की बेटी हूँ मैं, उस पिता की बेटी हूँ मैं ।।



बेटी भगवान का दिया गया एक ऐसा तोहफ़ा है, जो हर किसी को नहीं मिलता। जैसे बेटा घर का कुलदीपक है, वैसे ही बेटी घर की लक्ष्मी होती है। जिस घर में बेटियाँ होती हैं, उस घर में अलग ही रौनक रहती है। बेटियाँ अपने पापा की परियाँ, तो माँ की राजदुलारी होती हैं, जो कि उनकी अच्छी दोस्त के रूप में उनके साथ खुशियाँ और सारी दुख-तकलीफ साझा करती हैं। बेटियाँ एक साथ कई जिम्मेदारियाँ सँभालने का काम करती हैं।

आज लड़कियाँ लड़कों के समकक्ष ही नहीं, उनसे आगे भी निकल चुकी हैं। किरण बेदी, किरण मजूमदार शॉ, कल्पना चावला, पीटी ऊषा, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल ने सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त की है।

बेटियाँ वो होती हैं जो कि हर रिश्ते को बेहद अच्छी तरह न सिर्फ निभाती हैं बल्कि रिश्तों की अहमियत एवं प्यार करना सिखाती हैं। वे माँ, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में खुद को न सिर्फ साबित करती हैं, बल्कि एक-दूसरे के प्रति प्यार और सम्मान की भावना पैदा करती हैं। वे समाज के निर्माण एवं उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

हर कोख में बेटी यही करे पुकार, हम बेटियों की क्यूँ अनदेखी करे ये संसार ।
बेटियों से आबाद होता है घर-परिवार, अगर ये न होती तो थम जाता संसार ।।

मगर भले ही हम चाहे कितना ही खुद को विकसित मान लें, लेकिन समाज का एक तबका आज भी बेटियों को अभिशाप मानता है। दुनिया में लोग विकास के बड़े-बड़े दावे भी करते हैं। लेकिन इसी समाज में बेटियाँ माँ-बाप के लिए किसी बोझ से कम नहीं मानी जाती हैं। इसके मुख्य कारण में से एक दहेज प्रथा भी है। आज भी इन बेटियों को सामाजिक भेदभाव, दहेज प्रथा, शारीरिक शोषण, अधिकारों में भेदभाव जैसे अनेक सामाजिक कुरीतियों का सामना करना पड़ता है इन सबके बावजूद यही लड़कियाँ समाज में आगे बढ़कर विकास के हर क्षेत्र में अपना नाम कमा रही हैं।

लेकिन जरा सोचिये, अगर इस धरती पर बेटियाँ यानी लड़कियाँ ही नहीं रहें तो एक समय बाद इस समाज का वंश ही रुक जाएगा; फिर वो दिन भी दूर नहीं होगा, जब इस धरती से इन्सान का अस्तित्व भी खत्म हो जाएगा। इसी कारण समाज से अब बेटे-बेटी के बीच के फर्क को दूर करने के खातिर समाज में अब 'बेटी दिवस' (Daughter's Day) मनाने की परम्परा की शुरुआत हुई है, इसका मुख्य उद्देश्य बेटे-बेटी के बीच के अंतर को खत्म करते हुए उन्हें समाज में फैले कुरीतियों से बचाना है।

बेटियाँ होती हैं गर्व करने लायक, बेटियाँ होती हैं लक्ष्मी का रूप।
दुहिता – वंशों की रचिता ।।

प्रियंका सिंह, भुवनेश्वर

ନିଳିମା ଓ ବାପା

ହଠାତ୍ ଫୋନ୍‌ରେ ଟିଂ - ଟିଂ ଶବ୍ଦ ନିଳିମାର ନିଦ ଭାଙ୍ଗିଗଲା । ଏତେ ଭୋରରୁ କାହାର ଫୋନ୍ ଭାବି ସେ ବ୍ୟସ୍ତହୋଇ ଦୌଡ଼ିଗଲା ଫୋନ୍ ପାଖକୁ । ଯାଇ ଦେଖେ ତ ତା ମା'ର ଫୋନ୍ । ତା ମନ ଭିତରେ କ'ଣ କ'ଣ ସବୁ ଖରାପ କଥା ଘର କରିଗଲାଣି । “ହ୍ୟାଲୋ, ମା', କହ, କ'ଣ ହେଲା । ଏତେ ସକାଳୁ ଫୋନ୍ କଲୁ । ସବୁ ଠିକ୍ ଅଛି ତ ।” ସେପଟୁ ଉତ୍ତର ଆସିଲା ତୁ ଜଳଦି ଆସି ପହଞ୍ଚ, ତୋ ବାପା ତତେ ଖୋଜୁଛନ୍ତି । ଏତିକି କହି ହଠାତ୍ ଫୋନ୍ କଟିଗଲା । ଏପଟେ ନିଳିମା ହାତରୁ ଫୋନ୍ ଆଉ ପାଦତଳୁ ମାଟି ଖସିଗଲା । ତା ମନଭିତରେ ବାପାଙ୍କର ଛବି ଆଉ ତାର ପିଲାଦିନର ଅଭୁଲା ସ୍ମୃତି ସବୁ ଆଖି ଆଗରେ ନାଚିଗଲା ।

ବାପା, ମା'ଙ୍କର ଅଲିଅଳି ଝିଅ ନିଳିମା, ମା' ବେଳେବେଳେ ପାଠପାଢ଼ି ରାଗି ଯାଇଛନ୍ତି ସିନା ବାପାଙ୍କୁ ସବୁବେଳେ ଭଲପାଇବା ପାଇଚି ସେ । ଝିଅ ବୋଲି ବାପାଙ୍କର ଭାରୀ ସ୍ନେହ । ସେ । ପାଠ ଭଲ ପଢ଼େ ବୋଲି, ବାପା ସବୁବେଳେ ଗର୍ବିତ । ଭାଇରୁ ଟିକେ ଅଧିକ ଭଲପାଇବା ଅଧିକ ବୋଲି ଭାଇ ବି ସବୁବେଳେ ଈର୍ଷା କରେ ନିଳିମାକୁ । ମେଧାବୃତ୍ତି ଆଉ ସମସ୍ତ ଶ୍ରେଣୀରେ ଏନ୍‌ଆରଟିଏସ୍ ପାଇଥିଲା ବୋଲି ସବୁ ଶିକ୍ଷାନୁଷ୍ଠାନ ମାନଙ୍କ ଆଗରେ ସେ ମେଧାବୀ ଛାତ୍ରୀ ଆଉ ବାପାଙ୍କ ଆଗରେ ଗେହ୍ଲା ବି । ଘରେ, ବାହାରେ ସବୁଠି ନିଳିମାର ଖାଲି ଭୁରି ଭୁରି ପ୍ରଶଂସା । ଦଶମ, +୨, ଆଉ ପରେ ଇଞ୍ଜିନିୟରିଂରେ ବି



ବହୁତ ଭଲ ନମ୍ବର ରଖୁଥିବାରୁ ବାପା ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗସାଥୀରେ ଗର୍ବରେ ପାଟି ପତୁଥିଲେ । ସମୟକ୍ରମେ ଚାକିରୀ ଆଉ ତା'ପରେ ବିବାହ । ବାପାଙ୍କୁ ଝିଅ ନିଳିମା ଦୂରେଇ ଯାଇଥିଲା ସତ କିନ୍ତୁ ତା'ର ସୁଖ ପରିବାର ଦେଖି ବାପା ଏକ ରକମର ନିଶ୍ଚିନ୍ତ

ହୋଇଯାଇଥିଲେ । ନିଳିମା ତାର ଚାକିରୀ, ସ୍ବାମୀ ଆଉ ପରିବାର ମଧ୍ୟରେ ଏତେ ବ୍ୟସ୍ତ ହୋଇଗଲା ଯେ, କେବଳ ଫୋନ୍‌ରେ ବାପା ମା'ଙ୍କର ଖବର ନେବା ବ୍ୟତୀତ ତା' ପାଖରେ କିଛି ଉପାୟ ନ ଥିଲା । ସେଥିପାଇଁ ବି ବାପା ଗର୍ବ ଓ ମନଦୁଃଖ କରୁଥିଲେ । ଆଉ ତା'ପରେ ବାପା ବି ଚାକିରୀରୁ ଅବସରନେଲେ । ଆଉ ବାପା ଏବେ ନିଜକୁ ଏକା ମନେ କରୁଥିଲେ ।

ହଠାତ୍ ପଛରୁ ତାଙ୍କ ଶୁଭିଳା, “ମା' କ'ଣ ହେଲା, ତେମେ କ'ଣ ଭାବୁଛ ।” ନିଳିମା ଅତୀତ ସ୍ମୃତିରୁ ନିଜକୁ ଫେରାଇ ଆଣିଲା । ସ୍ବାମୀଙ୍କ ପାଖକୁ ଧାଇଁଯାଇ ଜିଦ୍ କରି ବସିଲା ଯେ, ସେ ବାପାଙ୍କ ପାଖକୁ ଯିବ । ଆଉ ସ୍ବାମୀ, ସ୍ତ୍ରୀ ଉଭୟ ମିଶିଯାଇ ପହଞ୍ଚିଲେ ଘରେ । ସେଠି ଯାଇ ଦେଖେ ତ, ବାପା ବଣି ଚା ପିଉଛନ୍ତି, ଆଉ ହାତରେ ଖବର କାଗଜ । ତାଙ୍କୁ ଦେଖି ମା' ହସି ହସି କହିଲେ, ହେଉ ଝିଅ, ତମ ମେଡ଼ିସିନ୍ ଆସିଗଲାଣି । ତା'ପରେ ନିଳିମା ଖବର ବୁଝି ଜାଣିଲା ଯେ ଦୁଇମାସ ହେଲାଣି, ବାପା ତାଙ୍କର ଗେହ୍ଲା ଝିଅକୁ ନ ଦେଖୁଥିବାରୁ, ଏ ମିଛ ବାହାନା ।

ଏହା ପରେ ସମସ୍ତଙ୍କ ହସରେ ଘରଟି ପୁରିଉଠିଲା ।

A daughter,
“full of love and care,
a cherished flower,
God's beautiful gift,
And life of a family.”

ମୀନାକ୍ଷୀ ପାତ୍ର

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ଆଜିର ନାରୀ

ସନ୍ଧ୍ୟା ନଇଁ ଆସୁଥିଲା । ବାହାର ବାଲକୋନୀରେ ବସି ଭାବୁଥିଲି ସତରେ କେତେ ଶୀଘ୍ର ସମୟଟା ଗଢ଼ିଚାଲିଛି । ଏବେ ପରି ଲାଗୁଛି ସତେଇଶ ବର୍ଷ ତଳର କଥା । ଯେବେ ମୁଁ ବାହା ହୋଇ ଶାଶୁ ଘରକୁ ଆସିଲି । ବାପଘରୁ ବିଦା ହୋଇ ଆସିବା ପୂର୍ବରୁ ମା ମୋତେ କହିଲେ ଦୁହିତା ଦୁଇ କୁଳକୁ ହିତା । ବାପ ଘରେ ଯେମିତି ସମସ୍ତଙ୍କ ମନ ନେଇ ଚଳୁଥିଲା, ଶାଶୁଘରେ ମଧ୍ୟ ସେମିତି ଚଳିବୁ । ମୋ ମନକୁ ଆସିଲା ଯେ ମା'ର ଦେଇଥିବା ଆଦର୍ଶ, ସଂସ୍କାର ନେଇ ବାଟ ଚାଲିବି । ଘରର ସବୁ ସଦସ୍ୟ ମାନଙ୍କ ପ୍ରତି ସ୍ନେହ ଭକ୍ତି ଓ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ନିଷ୍ଠାକୁ ପାଥେୟ କରି ଜୀବନରେ ଆଗକୁ ବଢ଼ିବି ।

ସମୟ କାହାକୁ ଅପେକ୍ଷା କରେ ନାହିଁ । ମା'ର ଆଦର୍ଶକୁ ଧରି ଚାଲିବାକୁ ସର୍ବଦା ମୁଁ ଚେଷ୍ଟା କରୁଥିଲି । କିନ୍ତୁ ସମୟର ଏହି ଦୋଛକିରେ ଜୀବନ ଯେ ଏତେ ସଂଘର୍ଷପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଯିବ ତାହା କେବେ ସ୍ୱପ୍ନରେ ସୁଦ୍ଧା ଭାବି ନ ଥିଲି । ମା'ଙ୍କର ଆଦର୍ଶକୁ ମନରେ ରଖି, ଶାଶୁଘରେ ସମସ୍ତଙ୍କ ମନ ନେବାପାଇଁ ଯେତେ ଚେଷ୍ଟା କଲେ ବି ମୁଁ ସବୁଥିରେ ହାର ମାନୁଥିଲି । ସ୍ୱାମୀ କହୁଥିଲେ ତରକାରୀ କଲ ଯେ ହେଲେ ମୋ ବୋଉ ପରି ନୁହେଁ, ଶାଶୁ କହୁଥିଲେ ସେ ଯେଉଁପରି ତାଙ୍କ ବୋହୁବେଳେ ଚଳିଥିଲେ, ସେହିପରି ସକାଳ ସନ୍ଧ୍ୟାଯାଏଁ ରୋଷେଇ ଘରେ ରହି ସେହି ପୁରୁଣା ପ୍ରଥାରେ ଚଳିବାକୁ, ଯାହାକୁ ମୁଁ ବୁଝି ପାରୁ

ନ ଥିଲି । ଶ୍ୱଶୁରଙ୍କର ଝିଅ ଓ ବୋହୁ ମଧ୍ୟରେ ବ୍ୟବହାରର ପାର୍ଥକ୍ୟ ମୋତେ ବ୍ୟଥିତ କରୁଥିଲା ।

ଏହିପରି ସଂଘର୍ଷପୂର୍ଣ୍ଣ ଜୀବନ ମଧ୍ୟରେ ଭାଗବାନଙ୍କ ଆଶୀର୍ବାଦରୁ ମୋ କୋଳକୁ କନ୍ୟା ସନ୍ତାନଟିଏ ଆସିଲା । ମା' ହେବାର ସୌଭାଗ୍ୟ ପାଇବା

ପରେ ମୋ ମା'ର ଉପଦେଶ ଭୁଲି ନ ଥିଲି । ହେଲେ ମୁଁ ସ୍ଥିର କରିଥିଲି, ମୁଁ ମୋ ଝିଅକୁ ସେହିପରି ଉପଦେଶ ଦେଇ ପାରିବି ନାହିଁ । ମୋ ବିଚାରରେ ଆଜିର ନାରୀ ଆଉ ସେହି ଦୁର୍ବଳା ହେଇ ରହି ନାହିଁ । ଆଜି ମୋ ଝିଅର ବିବାହ ବିଷୟରେ ମୁଁ ଯେତେବେଳେ ଭାବୁଛି, ସେତେବେଳେ ମୁଁ କ'ଣ ମୋ ଝିଅକୁ ସେହିପରି ଉପଦେଶ ଦେଇ ପାରିବି । ସେ 'ଆଜିର ନାରୀ' । ସ୍ୱାବଲମ୍ବୀ । ଜୀବନର ସବୁ ସଂଘର୍ଷକୁ ସହିବାର ଶକ୍ତି ତା'ର ଅଛି । ତେଣୁ ତୁଠପଥର ପରି ସବୁ ସହିଯିବାକୁ ମୁଁ ମୋ ଝିଅକୁ କହିପାରୁନି । ତୋ ଉପରେ କିଛି ଅତ୍ୟାଚାର ହେଲେ ତା'ର ପ୍ରତିବାଦ କରିବୁ ନାହିଁ ବୋଲି କହି ପାରୁନି । ନାରୀ ଯୁଗେ ଯୁଗେ ବଦଳିଯାଏ । ସମ୍ମାନନୀୟ । ଏହି ପାଠ ଦୁନିଆଁକୁ ପଢ଼ାଇବାକୁ ତାକୁ ପ୍ରେରଣା ଦେଇଛି ।

“ନାରୀ ନୁହେଁ କାହାର ପାଦର ପାଖେଇ

ନାରୀ ନାରୀୟଣୀ ସମ

ଏନ୍ତୁଡ଼ିରୁ ଜୁଇ ଯମା ଆଚରଇ

ଆଦ୍ୟାଶକ୍ତି ମା ପ୍ରଣାମ”

ମା ତୁ ଦେଇଥିବା ସଂସ୍କାର ଓ ମର୍ଯ୍ୟାଦାର ଏରୁଣ୍ଡି ବନ୍ଧରେ ଠିଆ ହୋଇ ମୁଁ ଯଦି କିଛି ଭୁଲ କରିଥାଏ, ତେବେ ମୋତେ କ୍ଷମା କରିବୁ, ଇତି, ତୋର ଝିଅ ସାଗରୀକା ।

ଲୀନା ମହାପାତ୍ର

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମୋ ବାପା

ଆଜି କାଲି ସବୁବେଳେ ବାପା ମନେ ପଡ଼ନ୍ତି ମୋତେ
ବହୁତ ବେଶୀ,
ଜଣେ ନାହିଁ କ'ଣ ପାଇଁ ମନକୁ ଆସନ୍ତି ସେ
ଏତେ ବେଶୀ ।

ମୋ ଜୀବନର ସବୁଠାରୁ ମଧୁର ଶବ୍ଦ ମୋ ବାପା ।
ମୋ ଜୀବନର ପ୍ରତି ଛୋଟ ଛୋଟ ଘଟଣାରେ
ମନେ ପଡ଼ିଯାଏ ମୋତେ ବାପାଙ୍କର ସ୍ନେହଭରା କଥା,
ଝିଅକୁ ଯେତେବେଳେ ମୁଁ ଆକଟ କରେ
ଘରକାମରେ ମତେ କିଛି ସାହାଯ୍ୟ କରୁନି କହି,
ସ୍ବାମୀଙ୍କର ସେହି ସ୍ନେହଭରା କରୁଛି ଯେ,
ସିଏ ପରା ପାଠ ପଢ଼ୁଛି, ଆଉ ତା' ପାଖରେ ଘରକାମ
କରିବାକୁ ସମୟ କାହିଁ ?

ଏହା ଶୁଣି ମନ ମୋର ଚାଲିଯାଏ ମୋ ପିଲାଦିନକୁ
ମାଙ୍କର ମୋତେ କାମରେ ସାହାଯ୍ୟ କରୁନି କହିବାବେଳେ,
ବାପାଙ୍କର “ସିଏ ଆଜି ପରା ତା କରିଥିଲା ।”
ବୋଲି କହୁଥିବା ସେହି ସ୍ନେହଭରା କଥା ।
ବାପା, ତମେ ଝଡ଼ ବରଷାରେ ଥିଲ
ମୋ ମୁଣ୍ଡର ଛତା, ଅନ୍ଧକାରରେ ଥିଲା ମୋ ପାଇଁ
ଏକ ଆଲୁଅ ରାସ୍ତା ।

ବାପା, ତମେ ଥିଲ ମୋ ପାଇଁ ଈଶ୍ବର,
ଚାଲୁ ଚାଲୁ ବାଟରେ କଣ୍ଟାଟିଏ ଫୁଟିଗଲେ
ତୁମେ କଣ୍ଟା ଗଛ କାଖେଇ ଦେଉଥିଲ
ତମ ଦେହରେ ଥିଲା ମୋ ଚପଳତାର ଦାଗ,
ତମ ହାତ ପାପୁଲିରେ ଲେଖା ଥିଲା ମୋ ସୁଖ, ମୋ ଭାଗ୍ୟ ।
ଏହି କିଛି ଦିନ ହେବ ବେଶୀ ମନ ପଡ଼ୁଛି ତୁମେ
ଯେତେବେଳେ ସବୁ ବିଶ୍ବାସ ନିଜ ଭିତରେ ପାଣି ଫାଟି ଯାଉଛି
ମୋ ପୃଥିବୀ କହିଲେ ଥିଲା ତମ ଦେହ,
ମୋ ଆକାଶ ଥିଲା ତମ ଆଖି,
ତମେ ଥିଲ ମୋ ଜୀବନ ନୌକାର ନାଉରା ।
ବାପା ତମେ ଥିଲ ମୋ ପଛରେ ବୋଲି,
ଜୀବନର ସବୁ ଝଡ଼ ଝଞ୍ଜାର କରିଛି ମୁଁ ସାମ୍ନା ।
ଦିନ ରାତି ସୁରକ୍ଷାର ବଳୟ ମଧ୍ୟରେ ରଖୁଥିଲ ବୋଲି

ମୋ ଶୈଶବ କରିଛି ନିରାପଦରେ ।
ସବୁ ଦୁଃଖ ମୋର ନେଉଯାଉଥିଲ
ବୋଲି,
ଶୋଇଛି ମୁଁ ପିଲାଦିନେ ବହୁତ
ଶାନ୍ତିରେ ।

ବାପା, ଜୀବନରେ ଚଳାପଥେ
ବହୁବାର ସାଜିଛି ତୁମ ଅଭିଜ୍ଞତା
ମୋ ପାଇଁ ଅନୁଭୂତି
ଲେଖିବାକୁ ଇଚ୍ଛା ହୁଏ କାହିଁ,
କେତେ ଧାଡ଼ି ତୁମ ପାଇଁ,
ହାତ ଧରି ମୋର ଚାଲି ଶିଖାଇଥିଲ,
ଯେତେ କରୁଥିଲି ଅଳି ସବୁ ସହୁଥିଲ ।
ମୋ ସୁଖ ପାଇଁ, ତମେ ସବୁ ଦୁଃଖ ସହି
ଲେଖୁଥିଲ ମୋ ଭାଗ୍ୟ ରେଖା
ତମେ ଥିଲ ମୋ ମଥା ଉପରର ଛାତ,
ମୋ ଖୁସି ପାଇଁ ଜିତୁ ଜିତୁ ହାରି ଯାଉଥିବା ମଣିଷଟିଏ,
ବାପା, ତମେ ଥିଲ ଅନୁଶାସନର ଡୋରିଟିଏ,
ମୋ ପାଇଁ ଆକାଶରୁ ତାରା ତୋଳି ଆଣିବି ବୋଲି
କହୁଥିବା ମଣିଷଟିଏ ।

ବାପା, ଅଚାନକ ଚାଲିଗଲ ତମେ
କେଉଁ ଏକ ଅଜଣା ରାଇଜକୁ,
କେବେ ପୁଣି ନ ଫେରିବା ପାଇଁ,
ଜୀବନରେ ମୋର ଭରିଗଲା ଶୂନ୍ୟତା ।
ଯାହା କେହି କେବେ ଭରି ପାରିବେ ନାହିଁ ।
ଆଜି ସ୍ବାମୀ, ସନ୍ତାନଙ୍କ ସ୍ନେହ, ପ୍ରେମରେ ଭରା
ମୋର ଏହି ସୁଖମୟ ସଂସାର ମଧ୍ୟରେ
ଅଚାନକ ତୁମ ସ୍ମୃତି ପଶି ଆସୁଛି ମୋ ମନ ଭିତରକୁ
ବାରମ୍ବାରବହୁତ ବେଶି
ବାପା, ତୁମକୁ ମୁଁ ପାରୁନି ଭୁଲି
ତୁମେ ମୋତେ ମନେ ପଡ଼ୁଛ ବହୁତ ବେଶି



ତନୁଶ୍ରୀ ଦାଶ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ସୃଷ୍ଟି ତାଙ୍କରି

ସୃଷ୍ଟିର ଏଇ ଅନୁପମ ସରଜନା ଦେଖୁ ଭାବେ
ଆଜି ମନେ ମନେ
କିଏ ସତେ ଏଇ ଚିତ୍ରକର ତା'ର ତୁଳାରେ
ଆଜିଯାଏ ସବୁ ଗୋପନେ ।
ନଦୀ ବହିଯାଏ କୁଳୁକୁଳୁ ନାଦେ ସତେ କି
ତାଙ୍କରି ସଙ୍ଗୀତ ଗାଏ
ଝର ଝର ଝରି ଝରଣା ବହୁଛି ମଧୁର ତାନେ
ତାଙ୍କରି କଥା କୁହେ ।
ମୁଣ୍ଡ ଟେକି ଠିଆ ଗିରି ଶିଖର କେତେ ଯେ
ତାହାରି ଶୋଭା
ଚାହିଁ ରହିଗଲେ ଆଖି ତ ଫେରେନି
ଅପୂର୍ବ ବର୍ଣ୍ଣବିଭା ।
ସବୁଜ ରଙ୍ଗର ବୃକ୍ଷରାଜି ଯେ ପୁଷ୍ପ

ତା ବୁକେ ଶୋହେ
ଜାତି ଜାତି ଫଳ ଭାରରେ ଯେ ବୃକ୍ଷ
ନତ ହୋଇ ରହିଥାଏ ।
ସବୁ ବୁଝି ପୁଣି ବୁଝି ତ ହୁଏନି
ଝରା ଶେଫାଳି ଯେ କାହିଁକି ଝରେ
କଣ୍ଠକ ଭରା ଗୋଲାପ ସେ ତ
କେତେ ଯେ ମାଧୁର୍ଯ୍ୟ ତା' ବୁକୁରେ ।
ସୁରୁଜ ଜାଲରେ ପହିଲି କିରଣ
ସବୁରି ମଙ୍ଗଳ କାମନା କରି
ଗୋଟିଏ ସୂର୍ଯ୍ୟ କୋଟିଏ ପ୍ରାଣରେ
ନୂତନ ଆଶା ସଞ୍ଚାର କରି ।



ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଶ୍ରମିକ (ଅର୍ଥନୀତିର ଅଭିନ୍ନ ଅଙ୍କ)

ଶିଳ୍ପୀ ଆମେ ଶ୍ରମିକ ଆମେ
କାମରେ ଥାଉ ମାତି
ମାନୁନା ଆମେ ବରଷା ଝଡ଼
ଝାଞ୍ଜି, ଖରା, ତାତି ।

ଆମରି ଶ୍ରମ ଆମରି ବଳ
ଗଢ଼ିଲୁ କେତେ କଳ
ଆମରି ଲାଗି ଦେଶ ଆମରି
ଜଗତେ ହେଲା ବଡ଼ ।

କୋଣାରକ ରେ ଟେକିଲୁ ଆମେ
ପୁରୀରେ ଆମ କାମ
ପଥର ଦେହେ ଫୁଟାଇ ଦେଲୁ
ଓଡ଼ିଆ ଜାତି ସୁନାମ ।

ଖଣିରୁ ଆମେ କୋଇଲା କାତୁ
ପଥର ଦେହୁ ଲୁହା,
ଆମରି ଶ୍ରମ ଆମରି ବଳ
ରହୁରେ ଦେଶର ନାଁ ।

ଶ୍ରମିକ ଲାଗି ଘର ଘରକେ
ବିଜୁଳି ବତୀ ଜଳେ
ମୁଣ୍ଡର ଝାଳ ତୁଣ୍ଡରେ ମାରେ
କ୍ଷେତରେ ସୁନା ଫଳେ ।

ଆମରି ଲାଗି ଉଡ଼ାଜାହାଜ
ଆକାଶେ ଆଜି ଉଡ଼େ
ଦରିଆବୁକେ ବୁଡ଼ା ଜାହାଜ
ଆମରି ଲାଗି ଚଳେ ।

ନୂଆରୁ ନୂଆ ଯନ୍ତ୍ର ଗଢ଼ୁ
ଦେଶର ଯଶ ପାଇଁ
ଶ୍ରମିକ ଆମେ ଶ୍ରମର ବଳେ
ଦେଶ ଆମର ଉନ୍ନତି ପଥେ ଚଳେ ।

ଚାହିଁ ନାହିଁ ଆମେ ଅଭାବ ଦୁଃଖ
ଯାଉରେ ଦେଶୁ ଯାଉ
ଶ୍ରମିକ ଆମେ, ଶ୍ରମର ବଳେ ଏ ଦେଶୁ
ଆଉବ ଦୁଃଖ ଯାଉ ।

ଶିଶା ନାୟକ
ଅନୁଗୋଳ



STRANGLED

Long ago walking past the lane
I met a girl, powerful like a hurricane
She was a chipper, and knew how to pamper.
Her personality was no less than a black hole,
I kept learning more about her,
only to be amazed of how flawlessly she
played all role.
Her dreams were beyond limit,
Only if she got the permit.
Years later I met her again,
Happy as earlier she looked but in vain,
There was no glitter in her eyes,
It took me a second to realize.
Astonished by this, I did some digging,
Found another victim suppressed under the
societal snapping.

Dreams were forced,
And choices were choked.
Living for others was all
she was taught.

They chopped her wings
And locked her in cage
She couldn't show her rage
And can't fight till she age.

The girl that I met at the
lane was gone
And I am clueless as to what I could have
done.

All I know is she was all alone,
But fought till she couldn't anymore or made
her clone.



Adyasha Mohanty
Damanjodi

BLAME IT ON ME!!!

Blame it on me
Am a woman!!
Blame it on me
For being me ,
Blame it on me
For fighting against me to be me,
And also fighting with those who believe I
deserve less to be me
So common,
Blame it on me

I was once celebrated
I was once worshipped
I was once treasured

Now I don't see
Cause may be
May be
I have let my self down
By letting others define me
By questioning my own existence
So blame it on me

I have got the nerves to be a man of a family,
I have got the Grey's to run the world,

I have got the blood to hold
everything together,
Still I let myself to be
judged and be vulnerable
So I say blame it on me!!!

I am a princess in mom's
arm,
I am a mom in a child's world,
I am a sister when a sibling needs,
I am wife caressing a lover,
I am a boss at work
I am a guide for strapped in miseries
I have reached the sky defying gravity
I have tailored the dreams of future,
Yet
Am surrounded with worries
who is to be blamed
Who is the reason for my distress,
Who led me to this state of disappointment
None but me,
So blame it on me...blame it on me



S. Rojavati
Angul

A JOURNEY TOWARDS LIGHT

'A beautiful journey towards light is where the soul shines brighter at every milestone.'

– Anonymous

The Quest for Peace and Happiness

Today, people love darkness, people love discotheques, people love dim lights, candle lights, and people love those night lamps more than bright lights. Darkness is the new 'in-thing' whether it's the external darkness or the internal darkness of the heart.

As a frog in a well thinks that the well is the only world, today majority of the human souls believe that happiness lies in all the external possessions, materialistic achievements. The frog has not tasted the freedom and brightness outside the well. So, it's happy in the darkness of the well.

Today, people have hundreds of excuses to indulge themselves in various addictions. They love to be slaves of alcoholism, smoking, drug addiction, etc. in the name of pleasures and ecstasy that they derive from them. But, in reality what they believe as pleasures are only temporary pain-killer medicines that have got dangerous lethal side-effects.

So, is there any chance for them to start the journey towards light or is it possible that they would die in darkness?

The Journey Starts

Let me quote a personal experience. Like many other young minds struggling for a respectable job, I too had to wrestle after college. Being a girl in Indian society, had other challenges waiting for me. A Post-graduate had a dream

that was about to shatter into pieces. The confrontations in personal and professional lives were like adding insult to injury. Life was ruined. I was the reason to ruin my own life. And the irony was that I being the reason, was unable to get it back on track. Maybe the inner strength was missing. Maybe I was ignoring my shortcomings. Maybe I was on a wrong path. A path of darkness. But the journey was destined to start. A journey towards light, a journey towards happiness.

So, my search for light landed me at a Spiritual Institution that teaches RajYog Meditation where I started practising regular meditation classes. No, I didn't renounce the materialistic world. But, it was only an addition to my daily routine. Some time and energy dedicated for enhancement of inner powers and internal cleaning. Just like we eat food and go to the gym for a healthy body. This was important for me for a healthier soul.

So used to darkness, it was a bit weird to open up to light. But, that didn't stop me from continuing with my quest for peace and happiness. The rules were strict like to stop eating non-vegetarian food as it can drag us back to darkness as per our religious texts. The daily routine had to be rescheduled as I had to make room for my daily meditation sessions. But, I must say all these were definitely worth it.

The Meditation Sessions

Initially, it was an arduous task to sit in one place for even 5 minutes. As the mind and body are used to for a rush, it hardly had experienced the peace of sitting at one place and doing nothing! But the toughest job was waiting for me. To silent the chattering mind! The speed was comparable to laser beams that spread really fast to far off places. The Mind too travels fast and to such extents and issues that have no connection to the present situations. Slowly and steadily, I learnt to silent the Mind from



waste thoughts and focus it on all the positive and elevated thoughts. The mind experienced peace and happiness as it entered into this new space which was alien to it till now. It was as if I entered into a beautiful cool and fragrant garden suddenly after a hectic day full of traffic jam and sweaty weather. It was magical. I wanted to be in that space forever.

The Obstacles Overcomed

It's nature's law for the high-energy waves to collide with obstacles. When the world loves to be in darkness and you're the odd one out to start a journey towards light, you're a foreigner for them. But, once you make them believe that sugar maintains its individuality even when you dissolve it in a full glass of milk, they are bound to simmer down. The taste only gets enhanced rather than spoilt.

I love the Journey more than the Destination

The Destination would be definitely wonderful when the Soul awakens to its full potential. But, the journey is equally enriching. Every milestone of the journey is where you leave behind a landmark for the voyagers behind. They would definitely get inspired by your personal experiences in future. The idea itself is so fulfilling. It's quite possible that some soul somewhere out there is getting inspired by this particular article while reading it right now!

So, this heart always sings these phrases while on a journey:

"Miles to go before I sleep, Miles to go before I sleep." – Robert Frost.

Sonal Moharana
Damanjodi

BETTER BE KIND THAN RIGHT

I read somewhere that "Being rude is easy, because it doesn't take any effort. However kindness shows great self-discipline and strong self-esteem." So I feel it is always better to be kind rather than right.

A couple of days back our driver asked me for a loan of 1000 rupees for his daughter's tuition fees. I knew from before that he had asked 2000 rupees from my husband for the same reason. Knowing very well that I was probably not doing the right thing, by fulfilling his demands, I gave him 1000 bucks! I thought that he might be a genuinely needy person and hence had no hesitation in giving in to his request. I tried to be kind and not right...

In another instance, my maid wanted 5000 rupees for some medical emergency at her home. Without thinking twice, I handed her the amount. Later I came to know that she had also borrowed money from other households! In both cases, I had some idea that I might be taken for a ride, but I still went ahead in being kind rather than be correct.

Last week, my son wanted to go to a restaurant with his friends for lunch. Instead of agreeing, I rudely told him that this was not the time to go partying with friends and that he should show

some maturity before demanding such things. He was crestfallen by my answer, because I was right. But I could have been kind and told him to have a gathering at someone's place and enjoy with friends.

Many a times, we end up hurting people by trying to be right. Instead of having the desired effect, we end up alienating from the person. I also feel that we hurt the people closest to us, where as we would think twice before behaving in a similar manner with an acquaintance.

Having a kind behaviour, attitude and reactions with others is what makes a person stand apart from others. Such a person becomes more accessible to others and people are comfortable to be in his or her company. In fact he may not have many virtues, but if he is kind rather than rude, he is definitely a better individual in terms of having a greater emotional quotient.

Shaswatee Mohanty
Bhubaneswar



KUDOS TO CORONA WARRIORS

The year of 2020 will definitely be remembered in the future times as a year of uncertainty, despair and fear. What started as a minor infection in the city of Wuhan, spread its wings on the entire planet. When people first heard of the outbreak of infections in China, everyone assumed it was first something that frequently accompanied harsh winters. But it was not the case.

The city of Wuhan, comprising 11 million people was put into strict lockdown on 23rd January 2020, which was the first place in the world to experience a lockdown of any sorts (of course no one knew this then). By beginning of February, due to immense amount of travel in and out of China, the coronavirus had already spread to 18 countries all over the world. And by mid March, the World Health Organization had classified the outbreak of coronavirus as a worldwide pandemic and countries all over the world started taking drastic steps to curb the infection.

In India, by the end of March, the entire country was put into lockdown. For a country with a population of 1.3 billion, this was a major setback. Other than healthcare workers, police personnel and essential utility workers, no one was allowed to roam on the streets unless in a case of emergency.

Now, having a massive population, the spread of the infections in our country was also rapid. Since healthcare workers were not actually prepared for such a surge in infectious cases, it put a huge strain on the hospitals. Government offices and schools were transformed into quarantine centers, since the infection period was at least for 2 weeks.

Despite all the difficulties, every healthcare professional, be it the doctors, nurses or the hospital staff did not give up their fighting spirit. They worked continuously for days and nights in order to safeguard the common people. And, this obviously was not without risks. By putting themselves out in the frontline, these healthcare workers were at the highest risk of catching the infections from an infected person. Another major hindrance was wearing the personal protection equipment

(PPE) kits, which was essential for protection against Covid19, but also made working for long hours even more tiresome. In spite of all these hardships, every healthcare worker took every effort for the fight against the virus.



But this did not mean that every healthcare worker emerged safe after treating a coronavirus patient. Thousands of doctors and nurses themselves caught the infection and numerous of them succumbed to it. However, it definitely did not stop these valiant healthcare officials from performing their duties. They have been taking care and helping patients recuperate from the disease since day 1.

Along with our brave healthcare workers, another driving force against coronavirus in our country has been the gallant police force. From ensuring that all the lockdown regulations are being followed by the public to making sure every sick person reaches the hospital, these heroic officers have been ensuring that everyone in the country feels safe during the harsh times.

The police were often responsible for guarding containment zones and quarantine centers. Since they were in close contact with the infected people, the police force too had to stay away from their homes for long durations and to often self isolate. Many of these hardworking officers lost their lives to the disease.

One important lesson that coronavirus has taught us is to pay more attention to our loved ones. Along with this, we have come to realize the importance of doctors in our lives. Without these healthcare officials, the fight against coronavirus would have been impossible. Also, the police personnel who have always maintained our safety and security are indeed the pillars of our society. So next time you meet any of these officials, do thank them for their hard work and valour.

Sarita Panda
Bhubaneswar

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर 'नालको महिला समिति' समाजसेवा में अग्रसर रहती है। इसी तरह अनुगुळ व दामनजोड़ी की नालको महिला समितियाँ भी आवास के समीपवर्ती इलाकों में सक्रियता से समाज-सेवा प्रदान करती हैं। इन सभी के सदप्रयास का उद्देश्य सभी समुदाय के प्रत्येक आयुवर्ग तक लाभ पहुँचाना है। यहाँ नालको महिला समिति के सदप्रयास की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

भुवनेश्वर



श्रीमती गायत्री बालसुब्रमण्यम एवं श्रीमती प्रतिभा मिश्र की विदाई तथा श्रीमती स्मिता नन्दा एवं श्रीमती अलका दास का स्वागत



लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर में कोविड तथा स्वच्छता जागरूकता पर नुक्कड़ नाटक



नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा द्वारा
केंद्रीय मंत्री का अभिवादन



माननीय राज्यपाल श्री गणेशी लाल द्वारा सस्मिता पात्रा
महोदया को श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार



नालको महिला समिति की सदस्याओं द्वारा छाया संसद



लिंगराज मंदिर में मास्क का वितरण



गाँधी पार्क, पुरी में मास्क का वितरण



नालको महिला समिति, भुवनेश्वर द्वारा बागवानी के कामगारों के मध्य आयोजित प्रतियोगिता



चंदका दामपारा अभ्यारण का भ्रमण



एन.आर.टी.सी. में महिला दिवस समारोह



खुशनुमा पल - ओ.टी.वी. कार्यक्रम - 'जाईफूल'



एसिड अटैक सर्वाइवर पद्धिनी के समर्थन में नालको महिला समिति भुवनेश्वर

दामनजोड़ी



दामनजोड़ी में कोविड जागरूकता नुक्कड़ नाटक



जे.ई.एल.सी. प्राथमिक पाठशाला, मरीछमाल के विद्यार्थियों को पोशाक वितरण



अध्यक्षा महोदया सस्मिता पात्रा द्वारा पर्यावरण उद्यान का उद्घाटन



घरेलू कार्य सहायकों के मध्य स्वच्छता जागरूकता





महिला दिवस समारोह



विद्यालयों में स्वास्थ्य किट का वितरण

अनुगुळ



नालको लेडीज़ क्लब की सदस्याओं द्वारा जगन्नाथ मंदिर की सफाई



नालको लेडीज़ क्लब में 'महिला मंच'



श्रीमती सस्मिता पात्रा के अनुगुल दौरे के दौरान गाँधी पार्क में मास्क वितरण



श्रीमती सस्मिता पात्रा द्वारा वृक्षारोपण अभियान

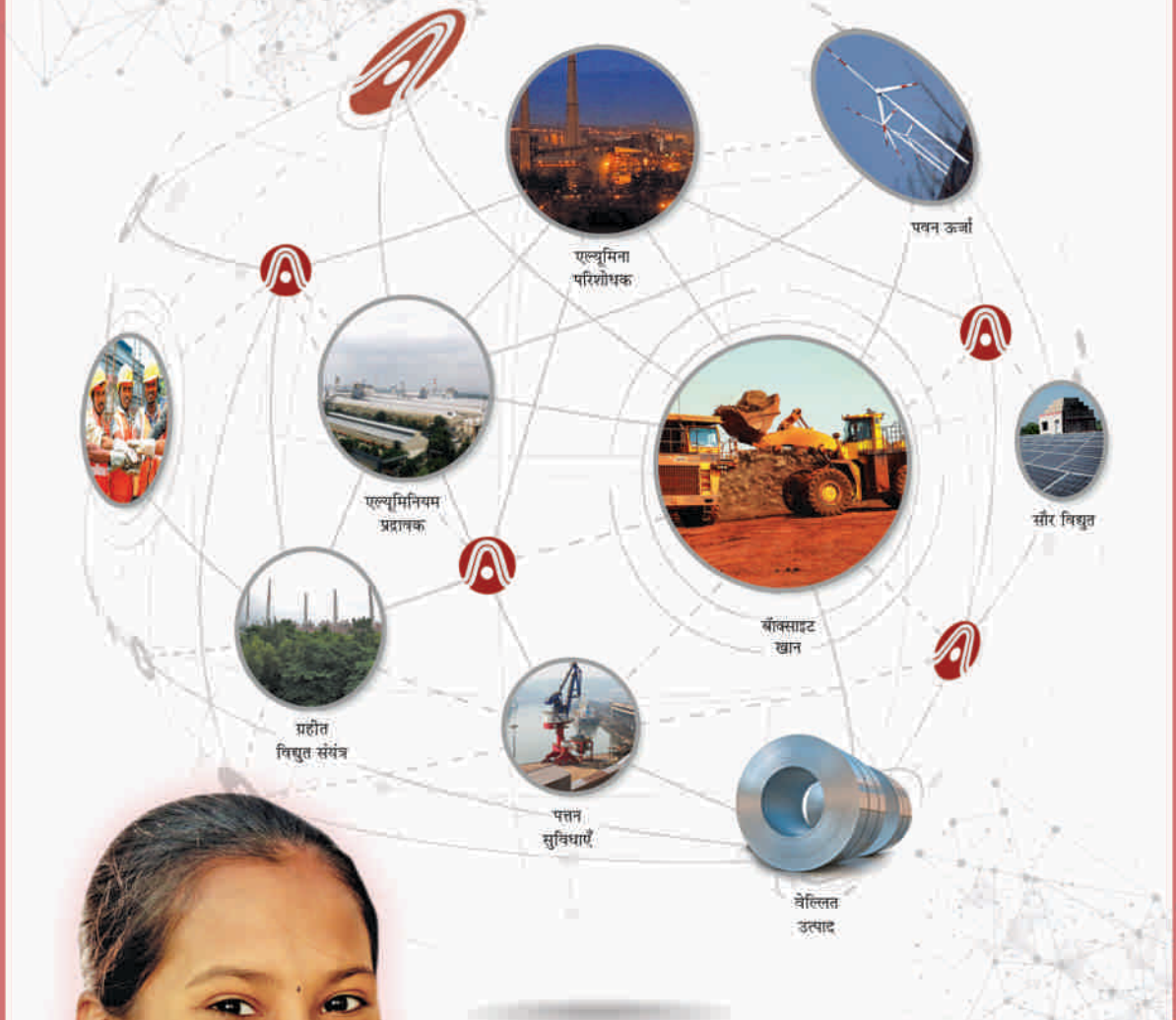
अनुगुल में महिला दिवस समारोह

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 15th May 2021. - Editor-in-Chief



नालको  NALCO
एक नवरत्न केंद्रीय लोक उद्यम

भारतीय सार वैश्विक प्रसार



एशिया में बृहत्तम एकीकृत एल्युमिना और एल्युमिनियम संकुलों में से एक, नालको के प्रचालन बॉक्साइट खनन, एल्युमिना परिशोधन, एल्युमिनियम प्रद्रावण, विद्युत सृजन से लेकर अनुप्रवाह उत्पादों तक की समग्र मूल्य श्रृंखला को पार कर के आगे बढ़ रहे हैं।

- ▲ विश्व में एल्युमिना का निम्नतम लागत का उत्पादक
- ▲ विश्व में बॉक्साइट का निम्नतम लागत का उत्पादक
- ▲ तीसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम



नालको
वेबसाइट



नालको
ट्विटर



@NALCO_India



@CMDNALCO



fb.com/nalcoindia



www.nalcoindia.com